सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-31 अंक-01 8 जनवरी, 2016 पृष्ठों की संख्या 8 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

संघ परिवार द्वारा राम मंदिर मुद्दे को फिर से उभारे जाने की एसयूसीआई(सी) ने की निन्दा

सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) ने विश्व हिन्दू परिषद और संघ परिवार द्वारा नये सिरे से राम मंदिर के मुद्दे को फिर से उभारे जाने के हाल ही में उठाये गये कदम की निन्दा की और जनता से इस अनपेक्षित साम्प्रदायिक आग को फैलाने के खूनी मंसूबों को नाकाम करने का आह्वान किया।

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 31 दिसम्बर को एक बयान जारी कर कहा :

हम विश्व हिन्दू परिषद जो आरएसएस के मातहत कार्य कर रहे धूर्त हिन्दू साम्प्रदायिक संघ परिवार का ही एक घटक है, उसके द्वारा आरएसएस और बीजेपी के समर्थन से दोबारा फिर राम मंदिर के सुषुप्त पड़े मुद्दे को उठाने और

(शेष पृष्ठ 5 पर)

7वें वेतन आयोग की कर्मचारी विरोधी सिफारिशों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

जन्तर मंतर पर विरोध सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. अचिन्त्य सिन्हा

दिल्ली : केन्द्र व दिल्ली सरकार के सैकड़ों कर्मचारियों ने 7वें वेतन आयाग की कर्मचारी-विरोधी सिफारिशों के खिलाफ जेपीए के आह्वान पर 22 दिसम्बर को जन्तर मन्तर पर विरोध प्रदर्शन किया। कर्मचारियों के नेता राम बाबू पाण्डेय ने कहा कि 7वें वेतन आयोग से 4 बार एन.पी.एच.ए. मिला और हमें आशा थी कि आयोग ने हमारी बात को ध्यान से सुना। परन्तु आयोग ने जिस प्रकार रिपोर्ट भारत सरकार को सौंपी है वह निराशाजनक है। कर्मचारियों और अधिकारियों के वेतन वृद्धि फार्मूले को अलग-अलग रख कर आयोग ने कर्मचारियों को नफरत व अधिकारियों से विशेष प्रेम का इज़हार किया है। कर्मचारियों का न्यूनतम वेतन रु 18000 किया है हालांकि संगठन द्वारा 15वें राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के आधार पर 28000 रुपये की मांग की गई थी। जबकि अधिकारियों के अधिकतम वेतन को 2,50,000 रुपये कर दिया है। कर्मचारियां को मिलने वाले कई भत्ते बन्द कर दिए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग में मिलने वाले भत्ते एच.पी.सी.ए./पी.सी.ए. से भी हजारों कर्मियों की वंचित करने की साजिश है, मकान किराया भत्ता भी 30, 20 व 10% से घटाकर 24, 18 व 8% कर दिया है। यहाँ तक कि वार्षिक वेतन वृद्धि व एम.ए.सी.पी. पर भी हमला किया गया है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ज्वॉइण्ट प्लेटफार्म ऑफ एक्शन के राष्ट्रीय अध्यक्ष कॉ. अचिन्त सिन्हा ने कहा कि 7वें वेतन आयोग ने 19 नवम्बर को अपनी रिपोर्ट पेश की थी। 20 नवम्बर को हमने अपने संगठन की तरफ से जिन बिन्दुओं पर आपत्ति थी, उनके बारे में वित्त मंत्री को और केबिनेट सैक्रेट्री को पत्र द्वारा सूचित किया था कि 10 दिसम्बर के अन्दर वो सभी सरकारी कर्मचारी संगठनों के साथ वार्ता करें। लेकिन सरकार की तरफ से अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है। जहाँ तक रिपोर्ट का सवाल है सातवां वेतन आयोग खुद ही कह रहा है कि दूसरे वेतन आयोग के बाद इसने सबसे कम वेतन बढ़ोतरी की सिफारिश की है। बहुत सारे अखबारों में आया है कि 25% बढ़ोतरी की है, 30% बढ़ोतरी की है मगर वेतन आयोग के कथनानुसार बढ़ोतरी 14.3% है उसको भी अगर ठीक से विचार किया जाए तो देखा जाएगा कि ज्यादा से ज्यादा कर्मचारियों के लिए कोई बढ़ोतरी नहीं होगी। दूसरा बिन्दु है कर्मचारी आन्दोलन की मांग लम्बे समय से रही है कि न्यूनतम वेतन और अधिकतम वेतन के फर्क को कम किया जाए लेकिन देखा गया कि ग्रुप सी और केबिनेट सैक्रेट्री के बीच फर्क हो गया 14 गुना जो पिछले वेतन आयोग से भी ज्यादा है। तीसरा बिन्दु जो बहुत महत्त्वपूर्ण है वह यह कि वेतन निर्धारित करने के मापदण्ड के बारे में सभी संगठन बहुत दिनों से बोल रहे थे कि किसी भी वेतन आयोग ने इसे सही ढंग से तय नहीं किया है। इस वेतन आयोग ने कहा कि मापदण्ड तय होना चाहिए और वह मापदण्ड 15वें श्रम सम्मेलन की सिफारिश

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ऐसे घृणित अपराधी को तो मृत्युदण्ड देना ही उचित

21 दिसम्बर को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी, ऑल इण्डिया डैमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन की महासचिव प्रतिभा नायक एवं ऑल इण्डिया डैमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन के महासचिव अशोक मिश्रा ने संयुक्त रूप से निम्न बयान जारी किया :

पूरा देश यह देख कर अचम्भित है कि निर्भया बलात्कार और हत्या केस का नाबालिग दोषी, जिसने हैवानियत और क्रूरता में बाकी सभी पाँचों दोषियों को पीछे छोड़ दिया था तथा जिसकी हैवानियत ही निर्भया की मौत का कारण बनी थी, तीन साल स्पेशल होम में रहकर अब स्वतंत्र घूम सकता है।

पीड़िता ज्योति सिंह पाण्डे जो अब निर्भया के नाम से जानी जाती है उसके माता-पिता तथा उनके अलावा भी विवेकशील लोगों, विशेषकर दिल्ली महिला आयोग ने नाबालिग दोषी की रिहाई का विरोध किया है। दिल्ली महिला आयोग ने इस विषय में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और इस बात की पुष्टि करने की चेष्टा की कि नाबालिग दोषी जिसने निर्भया के केस में एक घृणित आपराधिक दिमागी ढांचे का प्रदर्शन किया था, क्या वह वास्तव में सुधर गया है और अब वह समाज के लिए खतरा नहीं है। जैसा कि 21 दिसम्बर 2015 के 'हिन्दू' के अनुसार दिल्ली महिला आयोग ने नाबालिग द्वारा किए गए कृत्य को संज्ञान में रखते हुए तथा सुधार गृह में उसके व्यवहार और उसकी प्रवृत्ति के विषय में जो रिपोर्ट सरकारी संस्थाओं द्वारा पेश की गई है, उस पर गंभीर शंका जाहिर करते हुए कहा है कि नाबालिग दोषी का दिमागी ढांचा अभी भी आपराधिक है जो आज भी पूरे समाज के लिए, विशेषकर महिलाओं के लिए एक गंभीर खतरा है।

सभी यह आशा कर रहे थे कि इस प्रकार के घृणित अपराधी को मौत की सजा से कम सजा नहीं दी जानी चाहिए थी। लेकिन हमारे देश के जुवेनाइल जस्टिस एक्ट में जो गंभीर खामियाँ हैं उनकी वजह से ऐसा संभव नहीं है। देश के सभी विवेकशील लोगों तथा निर्भया के माता-पिता ने भी इसे वास्तविक न्याय का उपहास ही माना है।

निर्भया के सामूहिक बलात्कार और हत्या के इस पूरे घटनाक्रम में तथा उसकी पूरी न्यायिक प्रक्रिया एवं नाबालिगों द्वारा आज किए जा रहे अपराधों की बढ़ती संख्या से आज पूरा समाज भविष्य के बारे में चिंतित है तथा जुवेनाइल जस्टिस एक्ट में तुरन्त संशोधन करने की मांग कर रहा है।

जुवेनाइल जस्टिस एक्ट में संशोधन किए जाने के विषय में कुछ लोगों में जो संशय है वह सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस दीपक मिश्रा के एक हाल के आदेश से साफ हो जाता है। 21 दिसम्बर के 'द हिन्दू' के अनुसार उन्होंने निर्देशित किया है कि कभी-कभी ऐसी भी स्थितियाँ बन जाती है जब एक अपराधी ऐसी स्थिति में भी हो सकता है जिसमें किशोर अपराध के परिणामों के प्रति सजग नहीं है। लेकिन बलात्कार, हत्या और डकैती ऐसे अपराधों की श्रेणी में नहीं आते हैं। ये ऐसे घृणित कृत्य हैं जिनके विषय में यह मानना अति कठिन है कि नाबालिग इनके परिणामों से अवगत नहीं है।

पूरे देश भर में और देश की राजधानी दिल्ली में राज्य और केन्द्र सरकार के ठीक नाक के नीचे सामूहिक बलात्कार और हत्या की बढ़ती घटनाओं के चलते हालात यह मांग कर रहे हैं कि जुवेनाइल जस्टिस एक्ट में तुरन्त सुधार लाया जाना चाहिए ताकि बलात्कार और हत्या जैसा घृणित कृत्य करने के बाद भी कोई आरोपी उदाहरणमूलक सजा से इसलिए न बच जाए कि वह नाबालिग है। हम केन्द्र सरकार से मांग करते हैं कि जुवेनाइल जस्टिस एक्ट को संशोधित करने के लिए तुरन्त आवश्यक कदम उठाए जाएं।

आजादी आन्दोलन के क्रान्तिकारी शहीदों को याद किया

करोल बाग, दिल्ली : काकोरी काण्ड के शहीदों की याद में ए.आई.डी.वाई.ओ. दिल्ली राज्य कमेटी की ओर से 20 दिसम्बर को करोल बाग आफिस में असहिष्णुता के इस दौर में युवाओं का फर्ज़' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ शहीदों की फोटो पर पुष्प अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन ए.आई.डी.वाई.ओ. की दिल्ली राज्य सचिव प्रकाश देवी द्वारा किया गया। परिचर्चा का समापन एस.यू.सी.आई.(सी) पार्टी के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा द्वारा उपरोक्त विषय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन देते हुए किया गया। परिचर्चा में काफी संख्या में युवाओं ने भाग लिया। पार्टी के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. हरीश त्यागी भी परिचर्चा में उपस्थित रहे।

गुलाबी बाग, दिल्ली : 24 दिसम्बर को यहां ए.आई.एम.एस.एस. व ए.आई.डी.एस.ओ. की ओर से काकोरी काण्ड के शहीदों की याद में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

रोहतक, हरियाणा : काकोरी काण्ड के क्रान्तिकारी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी व रोशन सिंह के शहादत दिवस के अवसर पर 20 दिसम्बर को स्थानीय छोटूराम पार्क में ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. व ऑल इण्डिया डी.वाई.ओ. की ओर से स्मृति दिवस मनाया गया।

स्मृति सभा में मुख्य वक्ता एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के प्रदेश सचिव कॉ. सत्यवान थे।

मुख्य वक्ता सत्यवान ने अपने वक्तव्य में कहा कि रामप्रसाद बिस्मिल व अश्फाक उल्ला खां को 19 दिसम्बर 1927 व राजेन्द्र लाहिड़ी व रोशन सिंह को 17 दिसम्बर को अलग-अलग जेलों में फांसी दी गई। रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां आजादी आन्दोलन की ऐसी जोड़ी थी जो जात व धर्म से ऊपर उठकर आजादी के लिए लड़े। दोनों हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूत उद्धार व स्त्रियों की शिक्षा व समानता के प्रबल समर्थक थे। जाति अभिमान व इलाकापरस्ती के खिलाफ थे। स्वाधीनता संग्राम में लगे इन क्रान्तिकारियों को पैसे की बहुत तंगी थी। अत: उन्हें सरकारी धन लूटने की सूझी। 9 अगस्त 1925 को उत्तर प्रदेश के काकोरी स्टेशन के नजदीक एक रेलगाड़ी से सरकारी खजाना लूटने के केस में इन चारों क्रान्तिकारियों को फांसी की सजा हुई थी।

उन्होंने आगे कहा कि अपने साथी क्रान्तिकारियों की इस कुर्बानी की परम्परा को शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह समेत क्रान्तिकारियों ने अपने जीवन की बाजी लगाकर आगे बढ़ाया। स्वतंत्रता संग्राम की समझौताहीन धारा को नेताजी सुभाष ने और व्यापक बनाया।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ परन्तु सत्ता भारतीय पूँजीपति वर्ग के हाथों में आई। आज देश की आम जनता पूँजीवादी शोषण की चक्की में पिस कर सिसक रही है। गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी व अशिक्षा के तले दबी हुई है। छात्र-युवाओं को पथभ्रष्ट किया जा रहा है। महिलाओं के मान-सम्मान पर हर जगह हमले हो रहे हैं। स्वतत्रता प्राप्ति के बाद से ही पूँजीपति वर्ग व उनकी सेवादार पार्टियाँ व सरकारें मेहनतकश जनता की एकता व भाईचारे को तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के नाम पर लोगों को साम्प्रदायिकता के एक खतरनाक दुश्चक्र में फंसाया जा रहा है। फासीवाद के इस खतरे को रोकना और शोषणहीन समाज की स्थापना के शहीदों के सपनों को पूरा करने का वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है।

सभा में चण्डीगढ़ हवाई अड्डे का नाम शहीद भगतसिंह के नाम से हटाकर डॉ. मंगल सेन के नाम पर करने के विरोध में एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। सभा में संगठन ने फैसला लिया कि शहीद उधम सिंह के जन्म दिवस पर पूरे प्रदेश में मुख्यमंत्री का पुतला फूंक कर हरियाणा सरकार के नापाक प्रस्ताव का विरोध किया जाएगा।

सभा को डी.वाई.ओ. के सुमेर सिंह, बलवान सिंह व संदीप मेहरा तथा डी.एस.ओ. के प्रदेश सचिव हरीश कुमार व उमेश कुमार ने भी सम्बोधित किया।

मुजफ्फरपुर, बिहार : ए..आई..डी.एस.ओ. तथा ए.आई.डी.वाई.ओ. के संयुक्त तत्वावधान में 19 दिसम्बर को मुजफ्फरपुर जिले के सरैया प्रखण्ड अंतर्गत खैरा चौक पर काकोरी के शहीदों की याद में सभा का आयोजन किया गया।

सभा को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित करते हुए एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के राज्य कमिटी सदस्य कॉ. राजकुमार चौधरी ने कहा कि अंग्रेजी जुल्मो-सितम और शोषण-उत्पीड़न से देश को आजाद कराने का संघर्ष जाति-मजहब-सम्प्रदाय की संकीर्णताओं से मुक्त तमाम आवाम का साझा संघर्ष था। इस संघर्ष में सैकड़ों जोशीले और सरफरोशी की भावना से सराबोर नौजवानों ने अपना खून बहाया, अपनी कुर्बानी दी। उन्होंने कहा कि आज जब शासक वर्ग अंग्रेजों की ही 'फूट डालो और राज करो' की नीति के आधार पर शोषित-पीड़ित, गरीब, मेहनतकश आवाम की एकता को तोड़ने और अपने शासन को लम्बा करने के मकसद से हिन्दू-मुसलमानों को लड़वा रहा है, वैसे में अशफाकउल्ला खान व राम प्रसाद बिस्मिल की दोस्ती व हिन्दुस्तान की आजादी के लिए उनका साझा संघर्ष व साझी शहादत हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत है। उन्होंने कहा कि आज आजादी के 68 साल बाद भी काकोरी के शहीदों का सपना साकार नहीं हो पाया है और न ही ऊंच-नीच तथा अमीरी-गरीबी का खात्मा हो पाया है। वरन् इसके उलट आम आदमी का जीवन परेशानियों-तंगहालियों में फंसकर इंसानी व नैतिक मूल्यों की गिरावट का दंश झेल रहा है।

सभा को संबोधित करते हुए एस.यू.सी.आई (कम्युनिस्ट) के प्रखंड प्रभारी तथा राज्य कमिटी सदस्य कॉ. योगेन्द्र राम ने कहा कि आज केन्द्र और राज्य में बैठी सरकारें आजादी आंदोलन के क्रांतिकारियों-स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने की बजाय एक के बाद एक जनविरोधी नीतियों लागू कर रही हैं। उन्होंने कहा कि वैचारिक व धार्मिक असहिष्णुता की बढ़ती प्रवृत्ति मानवीय, सामाजिक, जनवादी व प्रगतिशील सोच रखने वाले हर इंसान को चिंतित व परेशान कर रही है। ऐसे में मौजूदा खुदगर्जी, मौकापरस्ती व फूटपरस्ती के विनाशकारी विचारों को शिकस्त देकर मूल्यों-नैतिकताओं व सामाजिक सरोकारों से लैस सही इंसान बनने-बनाने की जरूरत है।

समारोह की अध्यक्षता योगेन्द्र ठाकुर ने की। समारोह को सेवानिवृत्त शिक्षक कृष्ण कुमार सिंह, माधव भगत, रंजीत कुमार आदि ने भी संबोधित किया जबकि चकोर जी ने क्रांतिकारी-जनवादी गीत गाये।

पटना, बिहार : 20 दिसम्बर को भगत सिंह शहादत समारोह कमिटी के तत्वावधान में स्थानीय लंगरटोली चौराहा, पटना-4 में आजादी आंदोलन में काकारी के शहीद अशफाकउल्ला खान का शहादत दिवस मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता वैद्य श्री सुभाष दुबे ने की।

समारोह को संबोधित करते हुए पैगाम कल्चरल सोसाइटी के सचिव सुरेश फुलवारवी ने कहा कि आजादी आंदोलन के दौरान देश के क्रांतिकारियों-स्वतंत्रता सेनानियों ने जाति, मजहब से ऊपर उठकर कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन-शोषण के खिलाफ संघर्ष किया, अपना खून बहाया, अपनी कुर्बानी दी। उन्होंने कहा कि आज देश का सत्ताधारी वर्ग अंग्रेजों की ही 'फूट डालो और राज करो' की नीति का अनुसरण करते हुए देश की जनता को आपस बांटकर लड़वा रहा है ताकि जन समस्याओं के खिलाफ जनता संगठित होकर आंदोलन न खड़ा कर दे। उन्होंने कहा कि अशफाकउल्ला मुसलमान और रामप्रसाद बिस्मिल आर्य समाजी होते हुए भी दोनों में गहरी दोस्ती थी। दोनों ने आजादी के लिए एक साथ संघर्ष किया और एक साथ कुर्बानी भी दी। आज देश के नौजवानों को इन क्रांतिकारियों से सीख लेकर समाज में अमन-चैन का माहौल कायम करते हुए तमाम जन समस्याओं के खिलाफ साझा संघर्ष विकसित करने की जरूरत है।

समारोह को संबोधित करते हुए जितेन्द्र कुमार ने कहा कि हमें वास्तव में आजादी नहीं मिली, बल्कि एक तरह के शासकों ने दूसरे तरह के शासकों को सत्ता का हस्तांतरण कर दिया। आज सत्ताधारी वर्ग लोगों को हिन्दू-मुसलमान में बांटकर जनता की एकता को तोड़ना

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पटना

कौन सही हिन्दू–विवेकानंद या आरएसएस–भाजपा?

–कॉ. प्रभाष घोष

(मार्क्सवादी दार्शनिक, सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष के 39वें स्मृति दिवस पर 5 अगस्त 2015 को कोलकाता के रानी रासमणि एवेन्यू में आयोजित स्मृति सभा में एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष के भाषण के कुछ अंश)

भाजपा–आरएसएस के लोग दीवारों पर विवेकानंद की तस्वीर टांगते हैं और दावा करते हैं कि वे विवेकानंद के आदर्शों पर चल रहे हैं। जबकि देखिए, आरएसएस के नेता, जिनका नाम गोलवलकर है, आरएसएस जिन्हें हिन्दू मानता है, वे लिखते हैं, ''हिन्दुस्तान के सभी गैर हिन्दुओं को या तो हिन्दू भाषा और संस्कृति अपनानी होगी। उन्हें हिन्दू धर्म का आदर करना होगा और उसे पवित्र मानना सीखना होगा। वे हिन्दू राष्ट्र की गौरव गाथा के अतिरिक्त अन्य किसी विचार को प्रश्रय नहीं देंगे और हिन्दू नस्ल में मिल जाने के लिए अपने पृथक अस्तित्व को उन्हें खो देना होगा या उन्हें बगैर किसी मांग के और बगैर किसी विशेषाधिकार के, बगैर किसी तरह की रियायत के, यहां तक कि बगैर किसी नागरिक अधिकार के इस देश में पूरी तरह से हिन्दू राष्ट्र के अधीन रहना होगा।'' (वी ऑर ऑवर नेशनहुड–गोलवलकर) इसका मायने है कि जो हिन्दू धर्मावलम्बी नहीं हैं, उन्हें या तो हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू भाषा अर्थात् संस्कृत को मानना होगा, इनका आदर करना होगा, नहीं तो इस देश में उनका कोई अधिकार नहीं रहेगा। यही है आरएसएस के क्षत्रप गोलवलकर का फरमान। आश्चर्य की बात नहीं है कि रवीन्द्रनाथ, आईंस्टीन, बर्नार्ड शा, रोमा रोलां सहित पूरी दुनिया द्वारा जहां फासीवादी हिटलर की निंदा की गई थी, वहीं गोलवलकर जी ने हिटलर की तारीफों के पुल बांधते हुए लिखा था, ''जर्मनी ने अपने राष्ट्र और संस्कृति की पवित्रता को बनाए रखने के लिए सामी(Semetive) जाति–यहूदियों को भगाकर दुनिया में हलचल मचा दी थी। नस्लीय गर्वबोध यहां सबसे ज्यादा प्रकट हुआ है। जर्मनी ने यह दिखा दिया है कि क्यों भिन्नता रखने वाली नस्लों और संस्कृतियों के लिए अपनी जड़ें जमाना बिल्कुल असंभव है, उनका अखण्ड रूप में एकताबद्ध होना बिल्कुल असंभव है। इससे हिन्दुस्तान में हमारे लिए सीखने का अच्छा सबक है और इससे हम लाभान्वित हो सकते हैं।'' (वी ऑर ऑवर नेशनहुड–गोलवलकर) यह तो फासिस्ट हिटलर की बोली की गूंज थी।

विवेकानंद ने क्या कहा था, अब मैं उसे आपको पढ़कर सुना रहा हूँ। विवेकानन्द ने कहा था, ''ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं बनना पड़ेगा। मुसलमान को हिन्दू या ईसाई को बौद्ध नहीं बनना पड़ेगा। सभी धर्म दूसरे धर्मों के सार को अपनाकर पोषण प्राप्त करेंगे और अपनी अलग पहचान वाली विशेषताओं को बरकरार रखते हुए अपनी प्रकृति के अनुसार विकसित होंगे।...हम मानव जाति को उस मुकाम पर ले जाना चाहते हैं, जहां वेद नहीं होगा, बाइबिल नहीं होगी और न ही कुरान होगा। बल्कि सभी काम वेद, बाइबिल और कुरान के समन्वय से ही पूरे होंगे।...हम सिर्फ सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु भाव ही नहीं रखते, बल्कि हम सभी धर्मों को सत्य भी मानते हैं।'' (वाणी और रचना संग्रह–स्वामी विवेकानन्द) ये विवेकानन्द के कथन हैं। तब विवेकानन्द हिन्दू है या आरएसएस–भाजपा के नेता? विवेकानन्द ने कहा था, ''यदि मेरा कोई बेटा होता, तो ध्यान लगाने और साथ में एक पंक्ति की प्रार्थना व मंत्र जपने के अलावा उसे मैं और किसी तरह की धर्म की बात सीखने नहीं देता। तत्पश्चात, बड़ा होकर और विभिन्न रायों और परामर्शों को सुनते हुए वह उन सबसे अवगत हो जाता जो उसे सत्य लगते। इसलिए ये नितांत स्वाभाविक है कि एक ही साथ पूरी तरह से स्वतंत्र और निर्विघ्न रूप से मेरा बेटा बौद्ध, मेरी पत्नी ईसाई और मैं स्वयं मुसलमान हो सकता हूँ।'' (वाणी और रचना संग्रह–स्वामी विवेकाननद)

अब आप जांच–परख कर लीजिए विवेकानन्द हिन्दू हैं या आरएसएस–भाजपा के नेता? आरएसएस–भाजपाई कहते हैं कि इस देश में इस्लाम का विस्तार मुसलमान बादशाहों ने हथियारों के बल पर किया है। जबकि विवेकानन्द ने इसकी उलट बात लिखी थी, ''मुस्लिमों की भारत विजय पददलितों और गरीबों का मानो उद्धार करने के लिए हुई थी। यही वजह है कि हमारे देश की आबादी के पांचवे हिस्से की जनता मुसलमान बन गयी थी। यह सारा काम तलवार से नहीं हुआ था। यह सोचना कि यह सब तलवार और आग का काम था, बेहद पागलपन के सिवा कुछ नहीं है।'' (भारत का भविष्य, वाणी और रचना संग्रह–स्वामी विवेकानन्द) ''यह सब मिथ्या बकवाद है कि तलवार की धार पर उन्होंने धर्म बदला। जमींदारों और पुरोहितों से अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया।'' (पत्रावली, भाग 3, पृ 330, नया भारत गढ़ो, पृ. 18) इसका मायने है कि हिन्दू जमींदारों और पुरोहितों के अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए गरीब निम्न जाति के हिन्दू यहां मुसलमान बने थे। यह बात कौन कह रहे हैं? कह रहे हैं स्वयं विवेकानन्द। तब कौन सही है? आरएसएस या विवेकानन्द? क्या विवेकानन्द की तस्वीर लगाने का आरएसएस–भाजपाईयों को कोई नैतिक अधिकार है?

भाजपा नेताओं ने एक ऐतिहासिक स्मारक बाबरी मस्जिद को ढहा दिया, जैसे अफगानिस्तान के तालिबानों ने बुद्ध की मूर्ति को तोड़ा था। बाबरी मस्जिद में कोई नमाज भी नहीं पढ़ता था। वह वीरान पड़ी थी। वह एक पुराना ढांचा थी। आरएसएस–भाजपा ने सिर्फ वोट बटोरने के लिए पौराणिक काल्पनिक चरित्र रामचन्द्र के नाम पर जज्बात भड़का कर उस ढांचे को मटियामेट कर दिया। हम उनसे सवाल करना चाहते हैं और पहले भी किया है क्या चैतन्य हिन्दू नहीं थे? क्या रामकृष्ण परमहंस हिन्दू नहीं थे? क्या विवेकानन्द हिन्दू नहीं थे? क्या वे इस बात से वाकिफ नहीं थे कि बाबरी मस्जिद कहां है और उसका इतिहास क्या है? उन्होंने तो हिन्दुओं को कभी नहीं कहा कि इस मस्जिद को तोड़कर इसकी जगह राम मंदिर बनाओ। झूठी बात बताकर, सिर्फ वोट को ध्यान में रखकर इतने बड़े एक ऐतिहासिक स्मारक को आरएसएस–भाजपा ने ध्वस्त कर दिया और साम्प्रदायिक दंगा फैलाया। क्या वे जानते हैं कि रामकृष्ण परमहंस ने खुद मस्जिद में नमाज पढ़ी थी, गिरजाघर में प्रार्थना की थी। मंदिर के प्रसंग में विवेकानन्द ने लिखा था, '' करोड़ों रुपये खर्च कर काशी–वृंदावन के मंदिरों के कपाट खुल रहे हैं और बंद हो रहे हैं। एक समय देवता कपड़े बदल रहे हैं, तो दूसरे समय देवता भात खा रहे हैं या बांझ के बेटों की सात पुश्तों का पिण्डदान कर रहे हैं उधर जीवित देवता अन्न और वस्त्र के बिना मर रहे हैं।'' (वाणी और रचना संग्रह–स्वामी विवेकानन्द) विवेकानन्द ने इस बात की आलोचना की थी कि जो सही मायने में गरीब आदमी है उसके पास न तो खाने को है, न पहनने को है और तथाकथित पूजा–पाठ करने वाले लोग मंदिर पर मंदिर बना रहे हैं, देव प्रतिमाओं को सोने के आभूषण पहना कर सजा रहे हैं इन सबको विवेकानन्द ने धिक्कारा है। विवेकानन्द ने जो कहा था वह मैं भाजपा–आरएसएस नेताओं को याद दिलाना चाहूँगा। विवेकानन्द ने कहा था, '' पहले रोटी बाद में धर्म।'' (आमार समरनीति, सं.रचनाएं, बंगाली, 5वां खण्ड–स्वामी विवेकानन्द) सिर्फ भारत के लोग ही नहीं, यदि कहीं का भी कोई एक इन्सान भी यदि भूखा रह जाता है, तो उसको भोजन कराना ही मेरा सारा धर्म।'', ''मेरे देश का एक कुत्ता भी जब तक भूखा है, तब तक उसे भोजन कराना ही मेरा सारा धर्म है।'' (माई लाइफ एण्ड मिशन) भाजपा–आरएसएस के नेता इस विवेकानन्द के बारे में क्या कहेंगे? क्या इस विवेकानन्द से वे परिचित हैं? हम विवेकानन्द का आदर करते हैं। वे वेदांत दर्शन में विश्वास करते थे और हम मार्क्सवाद में विश्वास करते हैं। यहां हमारा मौलिक मतभेद है। लेकिन वे महान इन्सान थे। उन्होंने वोट की राजनीति नही की, उन्होंने झूठ नहीं बोला। उन्होंने यहां तक कहा कि सही देशप्रेमी कौन है? उनके शब्दों में, ''...लाखों लोग युगों–युगों से अधभूखे की हालत में जी रहे हैं। क्या आप महसूस करते हैं कि अज्ञानता का काला बादल भारत के आसमान पर छाया हुआ है? क्या यह बात आपको बेचैन नहीं करती? क्या इससे आपकी नींद हराम

नहीं हुई? क्या आपकी शिराओं से होकर आपके दिल की धड़कने बनकर यह आपके खून में नहीं समाई है? क्या इसने आपको पागल सा नहीं बना दिया है? क्या आप इस विध्वंस की व्यथा से दुखी हैं?...देशभक्त बनने के लिए यह पहली सीढ़ी है, बिल्कुल पहली सीढ़ी।'' (आमार समरनीति, सं.रचनाएं, बंगाली, 5वां खण्ड–स्वामी विवेकानन्द) क्या सत्ता में बैठे भाजपा–आरएसएस के नेता इस विवेकानन्द को जानते हैं? विवेकानन्द के दो व्यक्तित्व थे। एक ओर वे वेदांत दर्शन में विश्वास करने वाले अध्यात्मवादी थे, तो दूसरी ओर वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को जगाया था। उनके राष्ट्रवाद और जिस हद तक उन्होंने मानवतावादी मूल्यों का परचम बुलंद किया था, उसके लिए हम विवेकानन्द का आदर करते हैं और उन्हें महापुरुष मानते हैं। विडम्बना यह है कि एक ओर वास्तविक जगत में गरीबी, अत्याचार और अशिक्षा में राष्ट्रवादी–मानवतावादी विवेकानन्द गहरे दुखी हुए थे, प्रतिवाद की आवाज बुलंद की थी, दूसरी ओर वे जिस अध्यात्मवादी वेदांत दर्शन में विश्वास रखते थे, वह दर्शन कहता है, ''जगत मिथ्या, ब्रह्म सत्य।'' यानी दुनिया की सारी वस्तुगत वास्तविकता माया है, मिथक है, किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं है। लिहाजा इस तर्क से लोगों के दुख और गरीबी भी माया है। यही इतने महान इंसान के मामले में एक दुखदायक त्रासदी है। लेकिन देखिये इसी महापुरुष को कहना पड़ा था, ''जब तक भारत में करोड़ों लोग गरीबी और अज्ञानता के अंधेरे में डूबे रहेंगे, तब तक जो उन्हीं के खर्चे से शिक्षित हुआ है फिर भी उनकी तनिक भी चिंता नहीं करता–ऐसे हर व्यक्ति को मैं विश्वासघाती ही मानूँगा।...उन अमीर लोगों को जो अपनी शान–शौकत पर इतराते हैं और गरीब का खून चूसकर अपार धन कमाते हैं लेकिन उनके लिए कुछ नहीं करते, मैं उन्हें पापी और अधम मानता हूँ, जब तक भारत के बीस करोड़ लोगों के लिए कुछ नहीं करेंगे जोकि इस समय केवल भूखे मनुष्य मात्र हैं'' (वाणी और रचना संग्रह–स्वामी विवेकानन्द, बंगाली, खण्ड 2), (संकलित रचनाएं, बंगाली, 5वां खण्ड–स्वामी विवेकानन्द) विवेकानन्द की इस टिप्पणी की कसौटी पर हमारे देश के आज के 'देशप्रेमी', 'जनता के हमदर्द' नेताओं का स्थान कहां होगा? हालांकि मार्क्सवादी होने के नाते हम विभिन्न युगों के महापुरुषों के विचारों से मतभेद होने के बावजूद, उनके सपनों की, उन्होंने शोषित–पीड़ित लोगों के बारे में जिस हद तक ही उन्होंने सोचा, सरोकार महसूस किया, उसकी हम महज कद्र ही नहीं करते, बल्कि उस स्थान–काल में उनके गुणों का मूल्यांकन करने का संघर्ष भी करते हैं।

मार्क्सवाद ने ही दिखाया मानव इतिहास में धर्म का सही स्थान

यहां मैं कहूँगा कि हम धर्म प्रचारकों का आदर करते हैं। इस संबंध में मार्क्सवाद के बारे में गलत धारणा फैलाई जाती है। हम मानते हैं कि धर्म ने अपने समय में प्रगतिशील भूमिका अदा की थी। कुछ धर्मों ने तो सामाजिक प्रगति में संघर्षशील भूमिका तक अदा की थी। लेकिन धुंधले अतीत में मानव समाज में ईश्वर चिंतन नहीं था, धार्मिक चिंतन नहीं था। इस बात को मार्क्सवाद ने इतिहास का विश्लेषण करके निर्णायक रूप से दिखाया है। आप अण्डमान जायें, वहां जारोआ नामक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कौन सही हिन्दू ? .....

(पृष्ठ 3 का शेष)

आदिम कबीलाई लोग हैं। ये कपड़ा पहनना नहीं जानते। इनकी कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है, घर-बार नहीं है। इनमे कोई अमीर-गरीब नहीं है। इनका कोई शासक नहीं है। ये लोग किसी ईश्वर को भी नहीं मानते हैं ये लोग कोई पूजा-पाठ भी नहीं करते। आदिम युग ऐसा ही था। मार्क्सवाद ने यही दिखाया है।

मैं फिर विवेकानन्द की रचना पढ़कर सुना रहा हूँ। हो सकता है विवेकानन्द के अंधभक्त थोड़ा नाराज हो जायें, लेकिन क्या करें विवेकानन्द ने ही उन्हें मुसीबत में डाल दिया है। 1897 में विवेकानन्द लाहौर के अपने भाषण में कहते हैं, ''खोज पहले बहिर्जगत में ही शुरू हुई। मनुष्यों ने पहले पहल दुरूह समस्याओं के उत्तर बाह्य प्रकृति जगत से पाने की चेष्टा की।'' (अद्वैत वेदांत, दि साइंटिफिक रिलिजन) विवेकानन्द खुद कह रहे हैं कि मनुष्य का शुरूआती चिंतन इस भौतिक जगत को, इस प्रकृति जगत को लेकर है। यहीं विवेकानन्द का बड़प्पन है। उन्होंने इतिहास की सच्चाई को स्वीकार किया था। मार्क्सवाद ने मानव समाज में धर्म का सही स्थान क्या है, यह दिखाया है। इसलिए आदिम समाज में कोई धर्म नहीं था। धर्म दासप्रथा के जमाने में आया, जब समाज में शासक-शासित और शोषक-शोषित का रिश्ता कायम हुआ। इस दौर के बारे में मार्क्स का एक ऐतिहासिक कथन पढ़कर सुना रहा हूँ। मार्क्स ने कहा था, ''धार्मिक पीड़ा वास्तविक पीड़ा की ही अभिव्यक्ति है और साथ ही साथ वास्तविक पीड़ा के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन भी है। धर्म उत्पीड़ित लोगों के आंसू और उनकी आह है, हृदयहीन दुनिया का वह हृदय है, उसी तरह वह आत्माहीन परिस्थिति की आत्मा है।'' (क्रिटिक ऑफ हेगेल्स फिलॉसफी ऑफ राइट) शुरूआती युग के धर्म को मार्क्स ने कितना ऊँचा स्थान दिया है। उस जमाने में अत्याचार से पीड़ित दासों के आंसुओं और रुलाई से मर्माहम होकर ही विचारकों का एक दस्ता उभर कर आया थां उन्होंने कहा कि जब समाज में मालिक है, उनका हुक्म समाज में चल रहा है, तो दुनिया का भी एक मालिक, एक शासक होना चाहिए जिसके निर्देश पर दुनिया चल रही है। उनका मानना था कि सभी उस सर्वशक्तिमान भगवान की संतान हैं दास मालिक भी उनकी संतान हैं, दास भी उन्हीं की संतान हैं। इसलिए ईश्वर के विधि-विधान के अनुसार समाज चलेगा, शासकों को भी उस विधान को मानकर चलना होगा। उस जमाने में चिंतन क्या है, मन क्या है, हम किस तरह सोचते हैं-इन सबका कोई विज्ञानसम्मत जवाब नहीं था। यह उस समय नामुमकिन भी था। बहुत बाद में मार्क्सवाद ने विकसित स्तर के विज्ञान के आधार पर इन सबका जवाब दिया। मार्क्सवाद ने दिखाया कि वास्तविक परिवेश के साथ मनुष्य के मस्तिष्क के द्वंद्व के जरिये ही चिंतन पैदा होता है। वस्तुगत परिस्थिति के परिवर्तन के साथ चिंतन भी परिवर्तित होता है। उस समय के जो चिंतक थे, उनका मानना था कि सर्वशक्तिमान ईश्वर हमसे सोचने का कार्य करवा रहे हैं। वे ही हमें चिंतन दे रहे हैं। इसलिए हमारे मन में समाज की भलाई की जो बातें आ रही हैं, जो चिंतन-विचार आ रहे हैं, वे भगवान की दी हुई नेमत हैं। उनके लिए यही ईश्वर की वाणी है, अल्लाह का हुक्म है, गॉड का निर्देश है। दुनिया में इस तरह से धर्म की धारणा आई थी। इसीलिए महान एंगेल्स ने ईसाई धर्म के बारे में कहा था, ''ईसाई धर्म और मजदूर वर्ग का समाजवाद-दोनों ही इस बात का संदेश देते हैं कि आने वाले दिनों में गुलामी और दुखमय जीवन से मुक्ति मिलेगी। ईसाई धर्म का मानना है कि यह मुक्ति अगले जन्म में, मृत्यु के बाद स्वर्ग में प्राप्त होगी। समाजवाद कहता है कि यह मुक्ति इसी दुनिया में, समाज को बदल कर मिलेगी।'' (ऑन दि हिस्ट्री ऑफ अरली क्रिश्चियनिटी-एंगेल्स) उन्होंने ईसाई धर्म का जिक्र किया पर उनके कहने का तात्पर्य सभी धर्मों से था। कॉमरेड शिवदास घोष ने भी कहा था कि, ''चूंकि ईसाई धर्म ने यह प्रचार किया कि सभी बराबर हैं, गुलामों के मालिक गुलामों पर अकथनीय जुल्म ढहाकर भगवान की इच्छा के खिलाफ काम कर रहे थे और इसलिए गुलामों पर जुल्म ढहाना दरअसल ईसाइयत के खिलाफ था।...इस पहलू से विचार करने पर यह समझना कोई मुश्किल नहीं है कि ईसाई धर्म ने दास मालिकों के अन्याय और जुल्म के खिलाफ दासों के संघर्ष छेड़ने में मदद की थी और एक मायने में उस समय सामाजिक प्रगति में मदद की। इस्लाम धर्मावलम्बियों का मामला भी ऐसा ही था। याद रखें, सामाजिक विकास के एक खास स्तर पर आकर धर्म ने ही लोगों में नीति-नैतिकता की धारणा, मूल्यों की धारणा, सेवाभाव, दूसरों को नीचा नहीं दिखाना, क्या गलत है और क्या सही-इसकी धारणा निर्मित करने में मदद की थी। नतीजतन समाज में अनुशासन का भाव पैदा हुआ और उसने समाज को एकजुट, एकताबद्ध करने में मदद की और उस पहलू से भी देखा जाय तो धर्म ने सामाजिक प्रगति में मदद की थी।'' (मार्क्सवाद व द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के कुछ पहलू-शिवदास घोष) इस मायने में हम धर्म प्रचारकों का आदर करते हैं, उनका सम्मान करते हैं। आप में से अनेकों को शायद पता न हो कि 16वीं, 17वीं और 18वीं शताब्दी में यूरोप मे नवजागरण के जमाने में तत्कालीन उदीयमान पूंजीवाद के हित में पहले पहल बुर्जुआ विचारकों ने ही धर्म पर हमला बोला था। उस समय बुर्जुआ वर्ग सिर उठा रहा था, राजतंत्र का खात्मा हो रहा था, पूंजीवाद उस समय उदीयमान और प्रगतिशील था। सामंतवाद में राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था, बाइबिल का शासन ही ईश्वर का शासन समझा जाता था। सामंतवाद के खिलाफ संघर्ष करने के क्रम में विज्ञान को औजार बनाकर बुर्जुआ मानवतावादियों ने ही धर्म पर हमला किया। बेकन, स्पीनोजा, ह्यूम, कान्ट, फुअरबाक इत्यादि बुर्जुआ विचारकों ने धर्म को 'इतिहास का भटकाव' (abberation) कहा। धर्म की भूमिका का सही मूल्यांकन उन्होंने नहीं किया। उनके लिए धर्म इतिहास का एक भटकाव था, इतिहास का तोड़-मरोड़ था। इसलिए उन्होंने इसे परित्यक्त करने के लिए आह्वान किया था। इसके विपरीत मार्क्सवाद मानता है कि धर्म की ऐतिहासिक भूमिका रही है। एक जमाने में धर्म ने इतिहास में प्रगतिशील भूमिका अदा की थी। लेकिन क्या धर्म समसामयिक दुनिया की किसी समस्या का समाधान कर सकता है?

आज हमारे जीवन में जो ज्वलंत समस्याएं हैं-बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, जायज दिहाड़ी-मजदूरी न मिलना, नौकरी की समस्या, टैक्सों में बढ़ोतरी, किराये-भाड़े में बढ़ोतरी, महिलाओं पर जुल्म, पूंजीवादी शोषण, साम्राज्यवादी हमले इत्यादि जिन्हें लेकर लोगों का जीना दूभर है, क्या उसकी कोई चर्चा रामायण, महाभारत, कुरान, गीता या बाइबिल में है? इसकी कहीं कोई चर्चा है? इतना ही कहा गया कि नेकी और सच्चाई के रास्ते पर चलो। लेकिन इतिहास के किसी एक चरण में क्या न्याय है, क्या अन्याय है, क्या सही है, क्या गलत है-यह तो उस खास दौर की जरूरत के आधार पर ही तय होगा न। यहीं धर्म की सीमा है। जो लोग धर्म में विश्वास रखते हैं, उनके साथ हमारा कोई विरोध नहीं है। वे महंगाई, बेरोजगारी, मजदूरों की छंटनी, महिलाओं पर अत्याचार-बलात्कार, शिक्षा के अवसरों में कटौती, शराब और ड्रग्स की धड़ल्ले से बिक्री और फैलाव और ऐसे ही दूसरे तमाम खतरों के खिलाफ आंदोलन में शामिल हों। तमाम धर्मों में विश्वास रखने वाले लोग आयें। हम एक साथ लड़ सकते हैं। हमारा एतराज कहां है? हमारा एतराज तब है जब एतराज किया जाता है कि गरीब-अमीर तो भगवान के बनाये हुए हैं, गरीब इसलिए हैं कि यह उसके पिछले जन्म के पापों का फल है, इसलिए वह भूखों मर रहा है, इसलिए बलात्कार हो रहा है, किसी के बच्चे का अस्पताल में मरते इसलिए देख रहे हैं कि यह उसके पिछले जन्म में किये हुए पापों का फल है। सब कुछ विधि का विधान है। जब भगवान बचाने वाले हैं तो मारेगा कौन, जब मौत आयेगी तो बचाएगा कौन, सब खुदा की मर्जी है, नसीब का खेल है, इसलिए विरोध मत करो, लड़ो मत क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा है, इसलिए कष्ट चाहे जितना भी हो उसे भगवान की लीला मानकर सहर्ष बर्दाश्त करो, अगले जन्म में सुख मिलेगा-ये सारी चीजें जब समझायी जाती हैं, तब हमें एतराज है। इसे दर्शाने के लिए ही मार्क्स ने कहा है कि यह शोषक वर्ग पीड़ित जनता को सुलाये रखने के लिए धर्म को अफीम की तरह इस्तेमाल कर रहा है। आप खुद देख लीजिए, कितने सारे भूखे लोग दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं। कितनी महिलाएं चित्कार कर रही हैं। जो लोग विवेकाननद, मोहम्मद के पैगाम को प्रचार करते घूम रहे हैं, क्या उनमें से कोई इन सब का प्रतिवाद कर रहा है, विरोध कर रहा है? क्या आप उन्हें इन सामाजिक बुराइयों और विपथगमनों के खिलाफ संघर्ष छेड़ते हुए पाते हैं? भ्रष्टाचार, महिलाओं पर जुल्म-अत्याचार या महंगाई के खिलाफ क्या किसी मंदिर के पुरोहित, किसी धर्म प्रचारक, किसी मस्जिद के इमाम, किसी गिरजाघर के पादरी को संघर्ष करते हुए पाते हैं? आज यदि ईसा मसीह जिंदा होते, यदि हजरत मोहम्मद जिंदा होते, यदि हिन्दू धर्म के शुरूआती युग के प्रवर्तक लोग जिंदा होते, यहां तक कि यदि विवेकानन्द जिन्दा होते तो क्या वे इन सब को विवश होकर मान लेते? क्या वे कहते कि यह सब चलने दो, विधि के विधान के तौर पर इन सब को चलने दो, हम देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करें, मिन्नत करें? इसलिए यह स्पष्ट है कि धर्म आज इतिहास के पथ पर अपनी उपयोगिता खो चुका है। आज धर्म शोषक वर्ग के हाथों में मौकापरस्ती का औजार है। एक जमाने में धर्म प्रचारक भूखे मरे, उन पर हमले हुए, मार खाये हुए ही लड़े लेकिन आज एक-एक मंदिर-मस्जिद-गिरजाघरों के पास करोड़ों रुपये की सम्पत्ति है। पुरोहित, इमाम, याचक रुपयों की गद्दी पर बैठकर धार्मिक प्रवचन दे रहे हैं। अतीत में धर्म प्रचारकों ने अपने-अपने जमाने में अन्याय का विरोध किया और आज के धर्मगुरु कल्पित 'परलोक' की उम्मीद में 'इहलोक' के तमाम अन्याय-अत्याचार को बगैर विरोध के मानकर पूजा-अर्चना मे मशगूल रहने की बात समझाते हैं। बड़े-बड़े व्यापारी-उद्योगपति-कालाबाजारी ही हैं जो आज इन विचारों को संरक्षण दे रहे हैं। यहीं इतिहास के अटल मार्ग पर चलकर धर्म अपनी उपयोगिता खो चुका है, इस बात को हमें समझना होगा। महान लेनिन ने कहा है कि मार्क्सवाद आसमान से नहीं टपका है। दुनिया के तमाम जमानों में जितनी सच्चाईयां मिली हैं, जितने ज्ञान का अनुशीलन हुआ है, जितने बड़े-बड़े इंसान आये हैं, उनकी निरंतरता में ही मार्क्सवाद आया है। नये जमाने की जरूरत को मान्यता देते हुए नये सत्य को लेकर मार्क्सवाद आया है। उन्होंने कहा है, ''कम्युनिस्ट वे ही होंगे, जो तमाम जमानों में मानवजाति के द्वारा अर्जित ज्ञान भण्डार को अनुशीलन करेंगे।'' हम अतीत के महान धर्म प्रचारकों के जीवन संघर्ष का अध्ययन करते हैं, उनसे जो कुछ भी ग्रहण करने लायक है, वह ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। तमाम महापुरुषों से ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें यही सीख दी है।

आरएसएस ने आजादी आंदोलन का विरोध किया था

भाजपा-आरएसएस के विचार कितने बुरे हैं, उसका एक और नमूना हमारे देश के आजादी आंदोलन के बारे में उनके मनोभाव से भी समझा जा सकता है। उनके गुरु गोलवलकर ने कहा था, ''भौगोलिक राष्ट्रवाद और आम खतरे के सिद्धांत के आधार पर हमारा जो राष्ट्रीय सिद्धांत निर्मित हुआ है, उसने हमें हमारे हिन्दू राष्ट्रवाद के सिद्धांत के सकारात्मक और प्रेरणादायक तत्व से वंचित कर दिया है और हमारे स्वाधीनता आंदोलन को दरअसल अंग्रेज-विरोधी आंदोलनों में तब्दील कर दिया है। इस प्रतिक्रियावादी धारणा ने सम्पूर्ण स्वाधीनता आंदोलन, उसके नेतृत्व और आम लोगों पर विनाशकारी असर डाला है।'' (वी ऑर ऑवर नेशनहुड-गोलवलकर) आप खुद ही देख लीजिए, कितने खतरनाक शब्द हैं। सम्पूर्ण भारत का जो भौगोलिक क्षेत्र है, उस क्षेत्र को लेकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन केन्द्रित जो राष्ट्रवाद निर्मित हुआ है, उसे वे विनाशकारी बता रहे हैं। भारतीय राष्ट्रवाद की धारणा उभरने की वजह से गोलवलकर जी के अनुसार हिन्दू राष्ट्रवाद की उनकी धारणा में खलल डाल दी गई है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष को देशप्रेम और राष्ट्रवाद कहना उनके विचार में प्रतिक्रियावादी था और जिन नेताओं ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए राष्ट्रवाद की बात की है, वे प्रतिक्रियावादी सोच से संचालित हुए थे। आरएसएस-बीजेपी के नेता सोचते हैं कि हिन्दू राष्ट्र का नारा लगाना चाहिए

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कौन सही हिन्दू ? .....

(पृष्ठ 4 का शेष)

था। हिन्दू-मुस्लिम सभी को गले लगाते हुए जाति, धर्म, वर्ण का लिहाज किये बगैर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ आजादी आंदोलन के रास्ते जो एक संयुक्त भारत राष्ट्र की धारणा उभर कर आई, उसे प्रतिक्रियावादी बताया जा रहा है, तो आरएसएस के अनुसार देशबंधु चितरंजन दास, बाल गंगाधर तिलक, लाला लालपत राय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, खुदीराम, भगतसिंह, सूर्यसेन सहित सभी प्रतिक्रियावादी और देशद्रोही हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने हिन्दू राष्ट्र की बात नहीं की। वास्तविकता यह है कि यदि अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन नहीं होता तो देश में संयुक्त भारतीय राष्ट्रवाद की धारणा ही पैदा नहीं हुई होती। अंग्रेजों की हुकूमत आने से पहले भारत की परिस्थिति क्या थी? कुछ हिन्दू राजा थे, कुछ मुस्लिम नवाब और बादशाह थे। मुसलमान बादशाहों के आने से पहले अलग-थलग कुछ हिन्दू रियायतें होती थीं लेकिन वे सब मिलकर भारत एक राष्ट्र नहीं बना था। यदि अंग्रेज शासक यहां नहीं आते, यदि अंग्रेजी शासन के जरिये जो अलग-अलग जगहों पर आपस में जोड़ने वाली यातायात व्यवस्था, संचार व्यवस्था, उस सुधरी हुई संचार व्यवस्था के जरिये सुधरा हुआ व्यापार-वाणिज्य, एक अखिल भारतीय सुसमन्वित अर्थव्यवस्था पैदा नहीं होती और उसके जरिये राष्ट्रीय पूंजी पैदा नहीं होती, तो भारत में बंगाली, उड़िया, गुजराती, तमिल इत्यादि राष्ट्रीयताए अलग-अलग राष्ट्रीय राज्य होते। यदि हिन्दू को धर्म के आधार पर एक राष्ट्रीयता मान लिया जाये, तब तो नेपाल अलग राष्ट्र व राज्य नहीं होना चाहिए था। नेपाल तो हिन्दू धर्म मानने वाला देश है। नेपाल एक राष्ट्र है, लेकिन वह हिन्दू के तौर पर नहीं, बल्कि नेपाली राष्ट्रीयता के आधार पर है। समूचे मध्य एशिया में, अरब दुनिया में बहुत सारे राष्ट्र हैं, लेकिन वे तो सभी मुस्लिम हैं। सभी के द्वारा मुस्लिम धर्म माना जाता है। फिर भी सब मिलकर एक राष्ट्र न होकर, कई राष्ट्र क्यों हैं? क्या धर्म के आधार पर पूर्वी बंगाल(जो अब बांग्लादेश है) को समाये रख सका? इसलिए यह साफ है कि धर्म के आधार पर राष्ट्रीयताओं या राज्यों का निर्माण नहीं होता है। इसलिए याद रखिए, भाजपा की पितृसंस्था आरएसएस भारतीय नवजागरण का विरोधी रहा है, अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ संचालित भारत के आजादी आंदोलन में शामिल नहीं हुआ। आज सत्तारूढ़ होने पर भाजपा चिंतन-विचार-संस्कृति के मामले में इन गलत धारणाओं को थोप रही है। इस दोषपूर्ण अनैतिहासिक गलत थ्योरी को लेकर भारत को आज वे कहां ले जा रहे हैं? दरअसल आज पूंजीवाद को इसी तोड़-मरोड़ की जरूरत है। लोग, इस दोषपूर्ण अनैतिहासिक धारणा के बहकावे में आ जाने पर उनके जीवन में चाहे जितना भी घनघोर संकट क्यों न हो, विरोध नहीं करेंगे, सवाल नहीं करेंगे, तर्क-बहस नहीं करेंगे। भाग्य-किस्मत के चिंतन, पिछले जन्म में किये पापों के फल के विचारों, विधि का विधान आदि सोच के नशे में चूर रहेंगे। यही फासीवादी संस्कृति है। अधिक संगठित रूप में भाजपा के जरिये पूंजीवाद यह सब करने पर उतारू है। हांलाकि यह सच है कि इस देश में ऐसा करने में उसके सामने अड़चनें भी हैं। इस संदर्भ में कॉमरेड शिबदास घोष ने दिखाया है कि एकाधिकारी पूंजी का केन्द्रीकरण तो हुआ है पर क्षेत्रीय पूंजी और एकाधिकारी पूंजी के बीच द्वंद्व है। छोटी पूंजी बड़े पैमाने पर विद्यमान है। क्षेत्रीयतावाद भी है। ये सब सामग्रिक फासीवादी राष्ट्रीय एकता के निर्माण में बाधक हैं। दूसरी तरफ इस देश का शिक्षित तबका, उदारवादी जनवाद-पसंद लोग भी अच्छी खासी ताकत हैं। वे फासीवाद की बढ़ोतरी को इतनी आसानी से नहीं मानेंगे। इसलिए वे आंदोलन में उतरेंगे, विरोध करेंगे, संघर्ष होगा। यह वास्तविकता है। यदि हम सही तरीके से वर्ग संघर्ष और जन आंदोलन निर्मित कर सकें, तो इस खतरे का मुकाबला किया जा सकता है। लेकिन हम एक खतरनाक परिस्थिति का सामना कर रहे हैं। मार्क्सवादी क्रांतिकारी होने के नाते, सच्चे वामपंथी होने के नाते इस बात को हमें समझना होगा, आम लोगों को भी समझाना होगा।

आरएसएस 'हिन्दू राष्ट्र' की बात कर रहा है। इस संबंध में रवीन्द्रनाथ का एक कथन आप लोगों को याद दिलाना चाहूंगा। उन्होंने कहा था, ''भारत में केवल हिन्दू विचार को स्वीकार करने से नहीं चलेगा। भारत के साहित्य, कला, स्थापत्य, विज्ञान इत्यादि का विकास हिन्दू-मुसलमान दोनों के संमिश्रण की विचित्र सृष्टि के तौर पर हुआ है।'' (निबंध रवीन्द्र रचनावली-विश्व भारती) आरएसएस-और भाजपा प्राचीन परम्परा की बात करते हैं। अगर प्राचीन परम्परा की बात की जाये, तो इस देश में गौतम बुद्ध भी हुए थे। बहुत लम्बे अर्से तक इस देश में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा, जिसने प्राचीन काल में स्थापत्य, कला-साहित्य, ज्ञान के अनुशीलन का काफी विकास किया था। बुद्ध तो ईश्वर को नहीं मानते थे। इस देश में तो भौतिकवादी दर्शन था, चार्वाक दर्शन था, लोकायत दर्शन आदि भी था। क्या इस देश में प्राचीन काल में वेदांत ही एकमात्र दर्शन था? क्या यह कहना गलत नहीं होगा? परम्परा के नाम पर भारत के दूसरे प्राचनी दर्शनों की चर्चा-साधना वे नहीं करेंगे, क्योंकि वे हिन्दुत्व और हिन्दु राष्ट्र की थ्योरी के लिए खतरनाक हैं। उन्हें चाहिए अंधविश्वास, अंध धार्मिक विश्वास। ऐसा होने पर पूंजीवाद निश्चिंत रहेगा। इसलिए वे ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं। इस बात को हमें समझना होगा।

एक बात और मैं कहना चाहूँगा। सेक्युलरिज्म या धर्मनिरपेक्षता की अनेक की गलत व्याख्याएं अपने देश में हुई हैं। सेक्युलरिज्म की जो व्याख्या इतने दिनों तक कांग्रेस ने की है, वह है सभी धर्मों को समान रूप से प्रोत्साहन। सभी धर्मों को प्रोत्साहन के नाम पर, गांधीजी के नेतृत्व में हिन्दू धर्म को ही प्रोत्साहन दिया गया। वरना देश का बंटवारा नहीं हुआ होता। पाकिस्तान नहीं बनता। गांधीजी ने खुद हिन्दू फकीर का जीवन जिया। आजादी आंदोलन में ऊँची जाति वाले सवर्ण हिन्दुओं का ही वर्चस्व रहा। तथाकथित नीची जाति के लोग भी निश्चय ही, हम किसी को नीची जाति का नही मानते-आजादी आंदोलन में शमिल नहीं हुए। सवर्ण हिन्दुओं ने ही आजादी आंदोलन के नेतृत्व को अपने नियंत्रण में रखा। सही मायने में सेक्युलरिज्यम का क्या अर्थ है? सेक्युलरिज्यम, जिसका उद्भव यूरोप में नवजागरण काल या इतिहास में, जनवादी क्रांति के काल में हुआ।, के मुताबिक राज्य न तो किसी धर्म को प्रोत्साहित करेगा और न ही उसका विरोध करेगा। राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, संस्कृति इत्यादि में धर्म का कोई स्थान नहीं होगा। धर्म व्यक्तियों का व्यक्तिगत मामला होगा। कोई चाहे तो धर्म को माने और कोई चाहे न भी माने। कोई ईश्वर में विश्वास कर सकता है, कोई ईश्वर में विश्वास नहीं भी कर सकता है। यही सही सेकुलरिज्म है। लेकिन सुधारवादी कांग्रेस नेतृत्व ने समझौतापरस्त बुर्जुआ वर्ग के स्वार्थ में धर्मनिरपेक्षता की सही धारणा को हमारे देश में अपनी जड़ें जमाने नहीं दी। सुभाषचंद्र ने भी कहा था कि राजनीति के साथ धर्म का कोई संबंध नहीं होगां उन्होंने कहा था, '' धर्म को राजनीति से पूरी तरह अलग रखना चाहिए। धर्म व्यक्तिगत मामला होना चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर आदमी जिस धर्म को चाहे उसका अनुसरण करने की उसे पूरी आजादी होनी चाहिए। लेकिन धार्मिक और अतिप्राकृत धारणाओं द्वारा संचालित राजनीति संचालित नहीं होनी चाहिए। राजनीति का संचालन मात्र आर्थिक, राजनैतिक व वैज्ञानिक तर्क-विचार द्वारा होना चाहिए।'' (क्रॉसरोड्स-सुभाषचन्द्र बोस) उन्होंने आगे यह भी कहा था, ''संतों और साध्वियों के हाथों में त्रिशूल थमाकर हिन्दू महासभा ने वोटों की भीख मांगने के लिए भेजा है। त्रिशूल और भगवा वस्त्र देखकर हर हिन्दू का सिर झुक जाता है। धर्म का फायदा उठाकर और उसे मलिन कर हिन्दू महासभा ने राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया है।.. .इन विश्वासघातियों को आप राष्ट्रीय जीवन से अलग-थलग कर दें। आप उनकी बातों पर ध्यान न दें। हम चाहते हैं कि देश के आजादी पसंद नर-नारी मिलजुल कर तत्परता से देश की सेवा करें।'' (आनंद बाजार पत्रिका, 14 मई, 1940) उन्होंने आगे कहा था, ''...हिन्दू भारत में बहुसंख्यक होने की वजह से हिन्दू राज की गूंज सुनाई दे रही है। यह सब हवाई कल्पना की बातें हैं। ...हिन्दुओं और मुसलमानों के स्वार्थ अलग-अलग हैं-इससे बढ़कर झूठी बात कुछ और नहीं हो सकती है। बाढ़, अकाल, महामारी आदि प्रकोप तो किसी को नहीं बख्शते।'' (आनंद बाजार पत्रिका, 14 मई, 1940) रवीन्द्रनाथ ने भी राजनीति में धर्म को मिलाने का विरोध किया था। शरत्चन्द्र ने भी यही बात कही थी। उन्होंने कहा था, ''जब कभी हम आदर्श की बात करेंगे, तब हम उच्च आदर्श, कल्याणकारी और मर्यादापूर्ण आदर्श की ही बात करेंगे। हमें कोई आदर्श महज इसलिए नहीं स्वीकार करना चाहिए कि वह अत्यंत आदरणीय लोगों द्वारा बुलंद किया गया और स्वीकार किया गया। हमें उस आदर्श को भारत के आदर्श, एशिया के आदर्श, हिन्दुओं के आदर्श इत्यादि के रूप में कभी नहीं स्वीकार करना चाहिए। हम उस तरह की दलील नहीं देंगे। क्योंकि वह तो क्षुद्र मन का संकीर्ण विचार है, वह किसी भी तरह से सार्वजनीन और उदार विचार नहीं है। ...बड़े-बड़े ईश्वर विश्वासियों और भक्तों ने ही अब तक देश की पॉलिटिक्स को हैण्डल किया है। जिन्हें होना चाहिए था संयासी, वे बन बैठे पॉलिटिशियन। इसलिए भारत की पॉलिटिक्स में इतनी दुर्दशा है। '' (शरत रचनावली)

लेकिन सही धर्मनिरपेक्षता यानी सेकुलरिज्म का अभ्यास हमारे देश में नहीं हुआ। सीपीआई(एम)-सीपीआई ने भी सेकुलरिज्म की सही धारणा इस देश के लोगों को नहीं बतायी। अगर ऐसा होता, तो क्या उनकी यह दयनीय हालत होती? सीपीआई(एम) के मतदाता, कार्यकर्ता व समर्थक बड़ी तादाद में भाजपा में जा रहे हैं। जरा सोचिये, सीपीआई(एम) ने अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों को किस तरह की क्रांति और वामपंथ समझाया है। पिछले चुनाव में हिन्दू सीपीआई(एम) चली गयी तृणमूल कांग्रेस की ओर। सीपीआई(एम) ने ऐसा ही कम्युनिज्म, ऐसा ही वामपंथ, ऐसा ही सेक्युलरिज्स उन्हें समझाया है! वे चुनाव के लिए महज मौकापरस्ती का अभ्यास करते रहे।

संघ परिवार द्वारा राम मंदिर मुद्दे को ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

देश को एक बार फिर साम्प्रदायिक आग में धकेलने के मनहूस कदम का कड़ा विरोध करते हैं। देश के शांतिप्रिय और सौहार्द से रहने वाले लोग इस बात के साक्षी हैं कि किस प्रकार से एक पौराणिक चरित्र राम के जन्म स्थान को केन्द्र करके उन्मत्त साम्प्रदायिक भावावेश फैला कर संघ परिवार के कट्टरपंथियों ने ऐतिहासिक स्मारक बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया था और उसके अवशेषों पर राम मंदिर बनाने पर अड़े रहे हैं। इसके बाद ही संघ परिवार ने देश में खून-खराबे करवाने की सुनियोजित चाल चली थी और देश के दो प्रमुख धर्मों के बीच और अधिक नफरत फैलाने का काम किया था। अब यह कोई छिपा हुआ रहस्य नहीं रहा है कि साम्प्रदायिक आग फैलाने के पीछे मुख्य उद्देश्य था देश में साम्प्रदायिक ध्रूवीकरण पैदा करना और बीजेपी के लिए सत्ता में आने का रास्ता साफ करना।

अब जबकि बीजेपी की असलियत लोगों के सामने आ चुकी है और चुनावपूर्व के सारे वायदे मात्र एक छलावा साबित हुए हैं, आरएसएस और बीजेपी देश की शोषित-पीड़ित जनता का ध्यान उन समस्याओं से भटकाने के लिए जो उनके जीवन को तबाह कर रही हैं, धूर्तता से राम मंदिर के मुद्दे को फिर से पुनर्जीवित कर रही है और हिन्दू साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़का रही है, जबकि इससे होने वाले दुष्परिणामों के बारे में वे बखूबी वाकिफ हैं। बढ़ता साम्प्रदायिक विभाजन लोगों के धर्म-जाति से ऊपर उठ कर होने वाले संगठित जन आन्दोलन को विफल करने में भी बुर्जुआ शासक वर्ग की मदद करता है।

हम एक तरफ केन्द्र सरकार और उ.प्र. सरकार से मांग करते हैं कि इस तरह के कुत्सित प्रयास को रोकने के लिए कारगर कदम उठायें, वहीं दूसरी तरफ, हम जनता से आह्वान करते हैं कि वह संघ परिवार के द्वारा साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने और भाईचारे को तार-तार करने वाले और दोनों धर्मों के बीच झगड़े-फसाद पैदा करने वाले धूर्तता पूर्ण निहित स्वार्थों को समझते हुए अपनी एकता और भाईचारे को मजबूत बनायें।

6 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

सर्वहारा दृष्टिकोण

8 जनवरी, 2016

चण्डीगढ़ हवाई अड्डे का नाम बदले जाने के विरोध में मुख्य मंत्री का पुतला फूँका

भिवानी, हरियाणा : शहीद उधम सिंह जयंती पर 26 दिसम्बर को ऑल इण्डिया डैमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन और ऑल इण्डिया डैमोक्रेटिक स्टूडेण्ट्स ऑर्गेनाइजेशन ने चण्ढ़ीगढ़ हवाई अड्डे का नाम शहीद-ए-आजम भगत सिंह के नाम से हटाकर डा. मंगल सेन के नाम पर रखने की हरियाणा सरकार की कुचेष्टा का पुरजोर विरोध करते हुए स्थानीय हाँसी चौक पर मनोहर लाल खट्टर सरकार का पुतला फूंका।

इससे पहले भारी संख्या में छात्र-नौजवान स्थानीय दिनोद गेट स्थित श्री चेतराम प्रजापति धर्मशाला में एकत्रित हुये और प्रदेश सरकार के खिलाफ जोरदार नारेबाजी के साथ विरोध प्रदर्शन करते हुये सराय चौपटा, घण्टाघर के रास्ते हाँसी चौक पर पहुँचे।

ऑल इण्डिया डी.वाई.ओ. के जिला सचिव कॉ. संदीप दिनोद ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा चण्ढ़ीगढ़ हवाई अड्डे का नाम शहीद-ए-आजम भगत सिंह के नाम से हटाकर डा. मंगल सेन के नाम पर रखना शहीद-ए-आजम भगत सिंह का अपमान करना है। हम हरियाणा सरकार से मांग करते हैं कि सार्वजनिक स्थलों, सरकारी व गैर सरकारी स्थानों के नामों से आजादी आन्दोलन के क्रान्तिकारी शहीदों के नाम न हटाये जायें। हरियाणा की सरकार अपने इस कृत्य के माध्यम से हमारे महान क्रान्तिकारी शहीदों के गौरवमयी इतिहास व जीवन संघर्ष को मिटाने की कोशिश कर रही है। इन शहीदों का जीवन संघर्ष हमारे देश के छात्र-नौजवान और आमजन के जीवन को आलोकित करते हुये उच्च दर्जे का जीवन जीने के लिये प्रेरित करता है। आजादी आन्दोलन के महान क्रान्तिकारी युगद्रष्टा भगत सिंह आज भी देश के युवाओं के आदर्श हैं। अगर प्रदेश सरकार अपने इस फैसले को तुरन्त वापस नहीं लेती तो इसके विरोध में प्रदेशव्यापी आन्दोलन खड़ा किया जायेगा। इस प्रदर्शन में विकास, कमल, कविता, रजत, विशाल, ममता तिगड़ाना, रोहित, पूजा, राजेश दहिया, प्रीतम, अलका, जयबीर आदि के अलावा अनेक सदस्य शामिल हुए।

कैथल, हरियाणा : शहीद उधम सिंह जयंती पर भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन तथा डैमोक्रेटिक यूथ आर्गेनाइज़ेशन जिला कैथल कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में कस्बे के बाबा बिहारी दास चौक पर हरियाणा सरकार द्वारा चण्डीगढ़ हवाई अड्डे का नाम शहीद-ए-आज़म भगत सिंह हवाई अड्डे से बदलकर डॉ. मंगल सैन हवाई अड्डा किए जाने के विरोध में प्रदेश सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी कर रोष जताया और प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का पुतला फूंका।

प्रदशनकारियों को सम्बोधित करते हुए यूनियन के जिला प्रधान कॉ. नन्द लाल ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व हिन्दू महासभा ने अपने जन्मकाल से कभी भी आजादी आन्दोलन में भाग नहीं लिया बल्कि सारे आन्दोलन को प्रतिवादी बताया और अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों तथा क्रान्तिकारियों पर हिन्दू-मुस्लिमों का सांझा दुश्मन अंग्रेजों को बनाकर आजादी हासिल करने के लक्ष्य के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता बढ़ाने का और हिन्दू राष्ट्र गठन में रुकावट डालने का आरोप लगाया था।

उन्होंने कहा कि सरकार सत्ता के नशें में चूर होकर शहीदों का अपमान कर रही है जिसे यूनियन किसी भी सूरत में सहन नहीं करेगी और सरकार अगर शहीदों का नाम हटाने का कदम उठाने से बाज नहीं आई तो आन्दोलन तेज किया जायेगा।

रोहतक, हरियाणा : ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. की ओर से 26 दिसम्बर को शहीद उधम सिंह का शहादत दिवस सैण्ट्रल लाईब्रेरी, एम.डी.यू. के सामने मनाया गया। छात्रों को संगठन के प्रदेश सचिव हरीश कुमार ने सम्बोधित करते हुए कहा कि शहीद ऊधम सिंह गरीब व अनाथ होने के बावजूद देश की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए अपनी जान कुर्बान कर गए। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार शिक्षा में धार्मिक ग्रंथों को लागू करके धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा दे रही है जबकि शहीदों की जीवनियों को पाठ्यक्रम से हटाया जा रहा है।

आजादी आन्दोलन के .....

(पृष्ठ 2 का शेष)

चाहता है।

भगत सिंह शहादत समारोह कमिटी के अध्यक्ष शौकत अली ने युवाओं से अपील की कि वे अशफाकउल्ला खान, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह का रास्ता अपनायें और समाज तथा देश को आगे बढ़ायें।

समारोह को मो. साबिर हुसैन, मो. सिराजुद्दीन आदि लोगों ने भी संबोधित किया। समारोह का संचालन भगत सिंह शहादत समारोह कमिटी के सचिव संतोष कुमार ने किया। समारोह में पावेल शिमला मौर्या तथा खुशी खान ने देशभक्ति-जनवादी गीत गाया।

वाराणसी, उ.प्र.: ऑल इण्डिया डी.वाई.ओ. के बैनर तले आजादी आन्दोलन की गैर समझौतावादी धारा की आवाज बुलन्द करने वाले काकोरी काण्ड के अमर शहीदों राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी एवं रोशन सिंह का शहादत दिवस 20 दिसम्बर को उद्यान पार्क, सिगरा में सम्मानपूर्वक मनाया गया। उपस्थित लोगों ने शहीदों की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उनके विचारों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राम कृष्ण विद्या मन्दिर इण्टर कालेज के शिक्षक श्री सुरेन्द्र प्रसाद ने की एवं संचालन श्री सन्नी कुमार शर्मा ने कियां। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफाकउल्ला खाँ की दोस्ती आज के साम्प्रदायिक एवं असहिष्णुता के भयावह वातारण में एक रोशनी का कार्य कर सकती है। उन्होंने अपील की कि हिन्दुओं एवं मुस्लिमों दोनों को अपनी धार्मिक मान्यताओं को एक किनारे रखकर तथा साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ एकजुट होकर उन्हें परास्त करना हेगा एवं पूरी ताकत के साथ गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, कुशिक्षा, भ्रष्टाचार, अश्लीलता आदि समस्याओं के खात्मे के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार जनान्दोलन खड़ा करना पड़ेगा। ये सारी समस्याएं किसी धर्म या सम्प्रदाय को देखकर नहीं आती हैं और न ही किसी धर्म में इन समस्याओं को दूर करने का कोई तरीका बताया गया है। इनका खात्मा केवल जनान्दोलन के रास्ते से ही सम्भव है।

कार्यक्रम को कॉ. कमलेश मौर्या एवं मो. जावेद ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के अन्त में कॉ. कमलेश मौर्य ने एक क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुतत किया।

7वें वेतन आयोग की ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

के अलावा और क्या हो सकता है क्योंकि ये सिफारिशें वैज्ञानिक हैं और जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने भी स्वीकार किया है उसको मैं और भी समृद्ध करना चाहता हूँ और 25% उसमें जोड़ा। इसके बाद बोला कि ये बहुत ही समृद्ध सिफारिश है इसके आधार पर मैं तय करना चाहता हूँ। इतनी समृद्ध सिफारिश जो सुप्रीम कोर्ट से भी समृद्ध है उसका नतीजा निकला कि न्यूनतम वेतन रु. 18000 तय किया है। यदि उसने 15वें श्रम सम्मेलन की सिफारिशों को ही स्वीकार किया है तो इससे नीचे तो वेतन नहीं हो सकता है तब सवाल उठता है कि राज्य सरकारी कर्मचारियों का न्यूनतम वेतन कितना होगा? उधर ग्रुप डी कर्मचारी अभी भी हैं। दूसरी ओर ये 18000 रुपये की गणना बिल्कुल गलत है। हमने अपने 24 जुलाई के ज्ञापन में दिखाया था कि मकान किराया और शिक्षा भत्ता छोड़ कर न्यूनतम वेतन 28000 रुपये होना चाहिए तो 28000 रुपये की जगह हो गया 18000 रुपये, वह भी ग्रुप सी के लिए। तो हमें लग रहा है कि 7वें वेतन आयोग ने जो किया है वो एक छलावा है। 7वें वेतन आयोग की सारी रिपोर्ट को अगर बारीकी से देखा जाए तो पता चलेगा कि 7वें वेतन आयोग की रिपोर्ट धोखें की निकृष्टतम मिसाल है। बहुत सारे भत्ते समाप्त कर दिए गए हैं। मकान किराया भत्ता घटा दिया है, पी.सी.ए. खत्म कर दिया, नर्सिंग भत्ता नहीं बढ़ाया। वेतन आयोग का कहना है कि जिस सिद्धांत के आधार पर उसने ये सिफारिश पेश की है उसका मुख्य पहलू है न्यूनतम सरकार और न्यूनाकार अफसरशाही यानी सरकारी क्षेत्र को घटाओ और कर्मचारी संख्या में कटौती करो। इससे हमें लगता है कि पाँचवें वेतन आयोग से सरकारी क्षेत्र में भूमण्डलीकरण को लागू करने का जो काम शुरू हुआ था, छठे वेतन आयोग ने जिसे आगे बढ़ाया अब 7वें आयोग ने उसे और भी आगे बढ़ाया है। एक बिन्दू और है जो बहुत ही खतरनाक है, वह है कि परफोरमेंस रिलेटिड पे को लागू किया जाएगा। वेतन आयोग ने जोरदार सिफारिश की है कि सरकार पी.आर.पी. को शुरू करे। परफोरमेंस रिलेटिड पे की बात अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पैमाने पर बहुत दिन से चल रही हैं। बहुत सारी सैण्ट्रल ट्रेड यूनियनों जैसे ए.आई.यू.टी.यू.सी. और हमारे सरकारी कर्मचारी संगठन जे.पी.ए. ने इसका पुरजोर विरोध किया है। अब सरकार ये पी.आर.पी. लागू करने जा रही है, जो बहुत ही खतरनाक कदम है। ऐसी स्थिति में सभी कर्मचारियों को एकजुट हो कर लड़ना चाहिए। पाँच लाख पद खाली पड़े हैं। उन्हें भरने के बारे में नहीं बोला है मगर कर्मचारी संख्या में और भी कटौती करने की बात बोली है। यह जो खतरनाक नक्शा हैं इसके खिलाफ सारे देश में केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी, राज्य सरकारी कर्मचारी, अर्ध-सरकारी कर्मचारी, ठेका कर्मचारी, केजुअल कर्मचारी सबको इकट्ठा हो कर लड़ना चाहिए। यही मौजूदा हालात में सरकारी कर्मचारी आन्दोलन में वक्त का तकाजा है। वेतन आयोग की इन सिफारिशों को कर्मचारी नहीं मानेंगे। सरकार को चेताने के लिए हम सभी मिलकर संसद पर विशाल धरना देंगे और जरूरत पड़ी तो देशव्यापी हड़ताल भी की जाएगी।

धरने को एल.एन.जे.पी. के कॉ. राजकुमार, जी.बी. पन्त से विजय, एन.आई.सी.डी. से विनोद कुमार, कलावती हास्पिटल से एस. एस. नेगी, लेडी हार्डिंग से विशम्भर दयाल; राजा हरीशचंद्र हॉस्पिटल से राजबाला, बाबू जगजीवन राम हॉस्पिटल से सुखबीर; वन विभाग से हरीश त्यागी; रेलवे से एन.आर. राहा; ई.एस.आई.सी. से इण्द्राणी, अरुणा आसफ अली हस्पताल से विपति राम, डिपार्टमेण्टल केण्टीन से बच्चू सिंह आदि ने सम्बोधित किया।

मंच का संचालन भरतवीर व चन्द्रपाल ने किया। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय को तथा वित्त मंत्रालय को ज्ञापन भी दिए गए। इस धरने में रेलवे, हैल्थ, वन विभाग, श्रम विभाग, सी.पी.डब्ल्यू.डी., डी.डी.ए. सहित अनेकों विभागों के सैकड़ों कर्मचारियों ने भाग लिया।

निर्भया कांड के दोषी की रिहाई के खिलाफ

ए.आई.एम.एस.एस.-ए.आई.डी.एस.ओ.-ए.आई.डी.वाई.ओ. का विरोध प्रदर्शन

गुना, म.प्र.

गुना, म.प्र.: अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन की गुना इकाई द्वारा 16 दिसम्बर दामिनी की तीसरी वर्षगांठ पर मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि दी गई। महिला सांस्कृतिक संगठन की नगर सचिव कविता शाक्य ने संचालन करते हुए बताया कि दामिनी केस का जो नाबालिग अपराधी है उसको न्यायलय द्वारा बरी कर दिया गया है। जो कि गलत है जिससे समाज में इस तरह की अपराधिक गतिविधि और ज्यादा बढ़ जाएगी संगठन की नगर अध्यक्ष सीमा राय ने दामिनी को श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि दामिनी ने अपने जीवन के आखिरी दम तक जो संघर्ष किया उन महिलाओं को एक होंसला प्रेरणा दे गई। जिन महिलाओं व बच्चियों के साथ गलत होने पर हताश हो जाती है। संगठन की राज्य समिती सदस्या श्रीमती प्रीति पटवर्धन ने कहा कि 16 दिसम्बर को ऑल इण्डिया एम.एस.एस. के द्वारा पूरे देश भर में संकल्प दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिससे समाज में बढ़ रही इस तरह की घटनाओं को रोका जाए। उन्होंने घटनाओं के कारणों अश्लीलता, नशाखोरी पर रोक लगाने की मांग की। और समाज

पटना

हैदराबाद

सभा को संबोधित करते हुए ए.आई.एम.एस.एस. की राज्य सचिव साधना मिश्रा ने कहा कि निर्भया कांड एक ऐसा जघंन्य अपराध है जिसके अपराधियों को कभी भी रिहा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इसमें पूरे देश का मान सम्मान जुड़ा हुआ है। जिस दिन यह घटना घटी उसी रात देश के राष्ट्रपति भवन से लेकर देश की गलियों-गलियों में 'हमें न्याय चाहिए', 'बलात्कारियों को फांसी दो' का नारा गुंजता रहा और तीन वर्ष बीत जाने के बाद भी जुवेनाइल कानून में केंद्र सरकार सुधार न कर सकी। नतीजन देश जिसको सजा दे देना चाहता है, आज वह कानून की कमजोरी के कारण खुलेआम घूमने के लिए रिहा कर दिया गया है। उन्होंने सरकार से जुवेनाइल कानून में अविलंब सुधार कर अपराधी को दृष्टांतमलूक सजा देने की मांग की।

सभा को संबोधित करते हुए ए.आई.डी.एस.ओ. के राज्य सचिव रौशन कुमार रवि ने कहा कि देश की सरकार नौजवानों की नैतिक रीढ़ तोड़ देने के मकसद से अपसंस्कृति, अश्लील सिनेमा-साहित्य व शराबखोरी को बढ़ावा दे रही है, जिसका दुष्परिणाम छात्रों और नौजवानों के चरित्र में लगातार गिरावट के रूप में देखा जा रहा है। नतीजतन, छात्र-नौजवान छेड़छाड़, बलात्कार जैसे अपराध में संलिप्त हो रहे हैं। यहाँ तक कि निर्भया कांड जैसा जघन्य अपराध कर रहे हैं।

सभा का संचालन ए.आई.डी.वाई.ओ. के राज्य कमिटी सदस्य रमण सिंह ने किया। सभा को ए.आई.डी.वाई.ओ. के पटना जिला इंचार्ज अनिल कुमार चाँद, ए.आई.डी.एस.ओ. की राज्य कोषाध्यक्ष नताशा शर्मा तथा सुमनलता मौर्या आदि ने भी संबोधित किया।

हैदराबाद, आंध्र प्रदेश : निर्भया काण्ड के नाबालिग दोषी की रिहाई के विरोध में ए.आई.एम.एस.एस., ए.आई.डी.वाई.ओ. और ए.आई.डी.एस.ओ. की ओर से एक संयुक्त रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम हैदराबाद के बशीर बाग सर्कल पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ए.आई.एम.एस.एस. की जिला सचिव कॉ. के. ज्योति, ए.आई.डी.वाई.ओ. के तेलांगना एव आंध्रप्रदेश सचिव कॉ. आर. गंगाधर ने रैली को सम्बोधित किया।

निर्भया काण्ड के नाबालिग दोषी की रिहाई के विरोध में ए.आई.एम.एस.एस. की ओर से 22 दिसम्बर को विशाखापटनम में प्रदर्शन किया गया।

विशाखापटनम

श्रीनगर-उत्तराखण्ड में पब्लिक लाइब्रेरी का उद्घाटन

उत्तराखण्ड के शैक्षणिक-सांस्कृतिक केन्द्र श्रीनगर कस्बे में एक पब्लिक लाइब्रेरी खोली गई। इस लाइब्रेरी को शुरू करने के लिए ऑल इण्डिया डीएसओ की पहल पर प्रबुद्ध नागरिकों, अध्यापकों को लेकर एक जन कमेटी बनाई गई। लाइब्रेरी का नाम श्रीनगर पब्लिक लाइब्रेरी रखा गया। 20 दिसम्बर 2015 को हुए उद्घाटन कार्यक्रम में लाइब्रेरी के अध्यक्ष प्रोफेसर आर.सी. डिमरी ने लाइब्रेरी के महत्त्व के बारे में बताया। गुजरात से एआईएमएसएस की नेता मीनाक्षी जोशी ने लाइब्रेरी आन्दोलन और समाज पर इसके प्रभाव के बारे में अपनी बात रखी। प्रोफेसर सुरेखा डांगवाल ने छात्रों व अध्यापकों से आज की गंभीर समस्याओं का मुकाबला करने के लिए गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने का आग्रह किया। लाइब्रेरी के उपाध्यक्ष प्रो. एस.एस. रावत ने भी बात रखी। इस पब्लिक लाइब्रेरी का विधिवत उद्घाटन श्रीनगर पालिका के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मैतानी जी ने किया। कस्बे में यह आधुनिक किस्म की पहली लाइब्रेरी है। इस कार्यक्रम में भारी संख्या में छात्रों और अध्यापकों ने शिरकत की। इस लाइब्रेरी का संचालन ऑल इण्डिया डीएसओ उत्तराखण्ड के छात्र स्वयंसेवकों द्वारा किया जाएगा।

पटना : 'जुवेनाइल कानून में अविलंब सुधार करो', 'बलात्कारियों को दृष्टांतमूलक सजा दो' आदि मांगों को लेकर और निर्भया कांड के दोषी की रिहाई के खिलाफ 21 दिसम्बर को ए.आई.एम.एस.एस., ए.आई.डी.एस.ओ. एवं ए.आई.डी.वाई.ओ. के संयुक्त नेतृत्व में भगत सिंह चौक पर प्रतिवाद सभा आयोजित की गयी। में सांस्कृतिक आन्दोलन को चलाने की सभी से अपील की।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
सर्वहारा दृष्टिकोण
8 जनवरी, 2016
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Publication : 5 January

रेलवे के तत्काल किराए में वृद्धि की एस.यू.सी.आई.(सी) ने की कड़ी निन्दा

24 दिसम्बर को एस.यू.सी.आई.(सी) महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने निम्नलिखित बयान जारी किया:

ऐसा प्रतीत होता है कि बी.जे.पी.-नीत केन्द्रीय सरकार को अन्य नितांत जन-विरोधी नीतियों को लागू करने के अलावा निश्चित अंतरालों में रेल किराए बढ़ाने का दौरा पड़ता रहता है। जून 2014 में सत्तासीन होने के तुरन्त बाद यात्री किरायों में 14.2% की वृद्धि के साथ शुरूआत करने के पश्चात् 5 से 12 वर्ष के बीच आयु के बच्चों के लिए पूरा वयस्क किराया लागू कर देना और यात्री ट्रेनों में न्यूनतम किराया दुगना करने के साथ ही अबकी बार निशाना बने हैं 'तत्काल' किराए। रेलवे की हालिया अधिसूचना के अनुसार:

1. स्लीपर क्लास के लिए न्यूनतम तत्काल दरों को 90 रुपये से बढ़ाकर 100 रुपये और अधिकतम दर को 175 रुपये से बढ़ाकर 200 रुपये कर दिया गया है। यात्रा की गई दूरी के आधार पर यह राशि अलग-अलग होगी।

2. एसी-3 के लिए दरों को 250 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये जबकि अधिकतम दरों को 350 रुपये से बढ़ाकर 400 रुपये कर दिया गया है।

3. एसी-2 टियर के लिए न्यूनतम दरें 300 रुपये से बढ़ाकर 400 रुपये और अधिकतम 400 रुपये से बढ़ाकर 500 रुपये कर दी गई हैं।

4. एक्ज़ीक्युटिव क्लास में यात्रा करने वाले यात्रियों को 300 रुपये की बजाए 400 रुपये देने होंगे। न्यूनतम तत्काल बुकिंग शुल्क के रूप में और अधिकतम देना होगा 500 रुपये जो अब तक 400 रुपये था।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एक बार पुन: सरकार ने बड़ी आसानी से संसद को दरकिनार कर दिया और शीतकालीन सत्र समाप्त होने का इंतजार किया और तब 'तत्काल' दरों में 33% तक की वृद्धि की घोषणा की। यह भी ध्यान में रहे कि एक साल पहले रेल मंत्रालय ने घोषणा की थी कि 'तत्काल' टिकटों का 50% कोटा मौजूदा सिस्टम के तहत बेचा जाएगा और बाद का 50% 'प्रीमियम तत्काल' कोटा डायनामिक प्राईसिंग के तहत यानी मांग अधिक तो कीमत अधिक के तहत बेचा जाएगा। पूरा और एकमात्र लक्ष्य है आम यात्रियों को लूटना और निचोड़ना जबकि रेल सेवाओं के प्रत्येक पहलू में तीव्र गिरावट हुई है। इसमें यात्रा की सुरक्षा पर मण्डराता निरंतर खतरा शामिल है। सरकार ने सेवा में सुधार का जो वायदा किया था वो लगातार किराया वृद्धि की भरमार से एक धोखा और छलावा ही सिद्ध हुआ है। क्योंकि दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ी है, चोरी, सेंधमारी के साथ-साथ महिला यात्रियों की अस्मिता पर खतरनाक रूप से बढ़ते हमलों की घटनाओं ने रेल यात्रा को वस्तुत: दु:स्वप्न बना दिया है।

हम एक बार पुन: दोहराते हैं कि बुर्जुआ सरकार की तरफ से नियमित आर्थिक हमले न सिर्फ अबाध रूप से जारी रहेंगे बल्कि और भी अधिक खतरनाक आयाम हासिल करेंगे जब तक कि बिना समय गवांए तत्परता के साथ उत्पीड़ित जन एक साथ नहीं आ जाते है। एक सही नेतृत्व के तहत एक संयुक्त सशक्त प्रतिवाद आन्दोलन संगठित नहीं कर लेते हैं और सरकार पर इतना गहरा दबाव नहीं डाल देते हैं कि वह इन पर ऐसे हमले करने का साहस न कर सके।

साम्प्रदायिकता -विरोधी सम्मेलन सम्पन्न

लखनऊ: 19 दिसम्बर को अमीनाबाद स्थित गंगा प्रसाद मेमोरियल हॉल में साम्प्रदायिकता-विरोधी सम्मेलन का आयोजन एसयूसीआई (सी) पार्टी की उत्तर प्रदेश राज्य कमेटी के बैनर तले किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता राज्य कमेटी सदस्य कॉ. जगन्नाथ वर्मा ने की।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉ. सत्यवान ने कहा कि देश में साम्प्रदायिकता का ख़तरा गम्भीर होता जा रहा है। खासकर मोदी नीत भाजपा के सरकार में आते ही देश में धार्मिक कट्टरपन व अंधविश्वास बढ़ाने का काम तेज हो गया है। इसे रोकना अनिवार्य है क्योंकि किसी भी तरह की कट्टरता से मनुष्य की विवेचन क्षमता कुंद हो जाती है जिसे आसानी से बर्गलाकर निहित स्वार्थी तत्व अपने घटिया स्वार्थ साध लेते हैं। संघ परिवार देश में तेजी से फासीवाद को लाने के अपने उद्देश्य में पूरी तरह से तल्लीन है। आज फासीवाद ही मरणासन्न पूँजीवाद को जिन्दा रखने की कुछ मोहलत दे सकता है। मोदी जी दुनिया में एक तरफ पूँजीपतियों के मुनाफे के लिये विज्ञान के तकनीकी विकास पर जोर दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर, वे अतार्किक व रूढ़िवादी तथ्यों को इतिहास में, पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने के लिए अनुकूल परिवेश बना रहे हैं ताकि भावी पीढ़ी सही ज्ञान से वंचित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर संघर्ष में न उतर सके। उन्होंने कहा कि साम्प्रदायिकता को केवल भाषणों एवं सम्मेलनों से ही नहीं रोका जा सकता। इसे रोकने के लिये जनता के जीवन की तमाम समस्याओं को लेकर जोरदार आन्दोलन चलाना होगा।

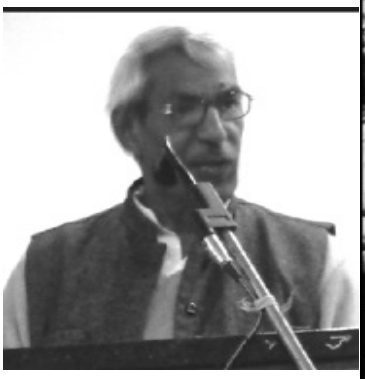

कार्यक्रम में अन्य विशिष्ट वक्ताओं में लखनऊ विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त फारसी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर खान मोहम्मद आतिफ ने इतिहास पर अपनी संक्षिप्त चर्चा के दौरान दिखाया कि यह मुल्क तहजीबन बहुत ही सहिष्णुता वाला है। देश में हिन्दू-मुस्लिम हजारों साल से आपस में प्रेम भाव से रहते चले आ रहे हैं, लेकिन शासक वर्ग को यह एकता रास नहीं आती है। वे अपने को सत्ता में बनाये रखने की साज़िश के तहत द्वेष भाव बढ़ाते रहते हैं और जनमानस में भ्रातृघाती दंगों के बीज बोते रहते हैं। हाल की तमाम ताजातरीन घटनायें ज्वलंत उदाहरण के रूप में देखी जा सकती हैं। उन्होंने उपस्थित जनसमूह से बहुत ही मार्मिक अपील की कि मेहनतकश आम अवाम इन साज़िशों को गहराई से समझते हुए इनके विरुद्ध उठ खड़े हों। मुरादाबाद कॉलेज के ललित कला विभागाध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र सिंह ने अपनी पुरस्कृत पेंटिंग्स के जरिये यह दिखाने की कोशिश की कि शासक वर्ग हमेशा से ही ज्ञान-विज्ञान की रोशनी को आम जन तक पहुँचने के रास्ते में बाधा खड़ी करता रहता है। इतिहास के अध्ययन-अध्यापन से पता चलता है कि शासक वर्ग एक विशेष नस्ल को सर्वश्रेष्ठ साबित करने की विशेष साजिश रचता रहता है इसके लिए वह ऐतिहासिक तथ्यों में हेरफेर करके लोगों को भ्रमित कर देता है। इनके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं में इलाहाबाद डिग्री कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. एस. के. मालवीय, सीपीआई(एमएल) के राज्य स्तरीय नेता कॉ. रमेश सिंह सेंगर, एस.यू.सी.आई. (सी) के राज्य सचिव मण्डल सदस्य कॉ. बेचन अली आदि रहे। सम्मेलन में एक प्रस्ताव कॉ. वन्दना सिंह ने रखा जिसे उपस्थित जनसमूह ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया। अध्यक्षीय सम्बोधन में कॉ. जगन्नाथ वर्मा ने समाज में व्याप्त जातिवाद, धार्मिक संकीर्णता व क्षेत्रवाद की हेय भावनाओं को परास्त करने की आवश्यकता पर बल दिया और जन जीवन की ज्वलन्त समस्याओं के खिलाफ एक दीर्घ स्थायी आन्दोलन के साथ सास्कृतिक आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया। कार्यक्रम मे सुकृति सांस्कृतिक मंच के द्वारा भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किये गये। सम्मेलन का संचालन कॉ. विजय पाल सिंह ने किया।

"Print-line
Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631